Dr Chiranjeev Kr Thakur
Sociology

BA Part II (Sub/GEN)

Lecture II

निर्धनता का अर्थ एवं परिभाषा → पीटर टाउनसेंड ने निर्धनता को प्रति व्यक्ति औसत आय से भी नहीं मापा है। पर यह भी नहीं माना है कि प्रत्येक व्यक्ति जिसके पास साधनों का अभाव है, वह निर्धन है। इनके अनुसार "निर्धन वह व्यक्ति है जो अपने समाज में रहते हुए उस समाज विशेष की रीति-रिवाज वाला जीवन प्राप्त नहीं कर सके एवं न ही जिनकी रहने की व्यवस्था एवं सुख-सुविधाएं उस विशिष्ट समाज के रीति-रिवाजों के अनुकूल हो। टाउनसेंड ने निर्धनता व निर्भरता से मुक्ति के लिए अपनी योजना संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार के सम्मुख प्रस्तुत की जिसे टाउनसेंड योजना के नाम से जाना जाता है। इनके अनुसार निर्धनता बताने का यह ढंग उचित है कि अमुक समाज में 10, 20 या 30% व्यक्ति निर्धन है।

गोडार्ड के अनुसार, "निर्धनता उन वस्तुओं की अपर्याप्त पूर्ति की वह दशा है, जिससे एक व्यक्ति को अपने तथा अपने आश्रितों के स्वास्थ्य एवं शक्ति को बनाए रखने के लिए आवश्यकता होती है।"

वीवर के अनुसार, "निर्धनता एक ऐसे जीवन स्तर के रूप में परिभाषित की जा सकती है जिसमें शरीर तथा स्वास्थ्य संबंधी दक्षता नहीं बनी रहती है।"

अतः इन परिभाषाओं से स्पष्ट है कि –

1. निर्धनता की व्याख्या केवल आय के आधार पर नहीं की जा सकती चाहे आय की उस सीमा तक कम होने के आधार पर की जा सकती है जिसमें एक निर्धन व्यक्ति एवं उस पर आश्रित सदस्य अपने जीवन की मूलभूत न्यूनतम आवश्यकताओं जैसे भोजन, वस्त्र, आवास आदि की पूर्ति करने में स्वयं को असमर्थ पाता है।

2. निर्धनता की व्याख्या एवं विवेचना में यह भी देखा जाता है कि व्यक्ति जिस समूह व समुदाय में उसी के स्तर के अन्य लोगों की तुलना में वह स्वयं को रख पाने में असमर्थ रहता है।

3. निर्धनता व्यक्ति की अपर्याप्त आय के साथ-साथ उसके अविवेकपूर्ण अपव्यय के रूप में भी परिभाषित होती है अर्थात् अधिक आय एवं अविवेकपूर्ण ढंग से किया गया अपव्यय भी निर्धनता की श्रेणी में आता है।

4. निर्धनता को एक सापेक्षिक अवधारणा माना जाना चाहिए अर्थात् निर्धनता का कोई भी एक सार्वभौमिक मापक नहीं हो सकता जिसे प्रत्येक समाज, काल एवं स्थान पर प्रयुक्त किया जा सके क्योंकि वह समाज स्थान एवं काल के अनुसार परिवर्तित होता है।